Special HINDI for All comp. Exams For - Mp S.I. , Jail police , Patawari , Teacher , Ssc , Etc.
By - RAMKESHeducation.com Mob. 6261054457 , 7510856752

हिन्दी भाषा का विकाश –: हिन्दी विश्व की लगभग 3000 भाषाओं में से एक है। भारत में 4 भाषा परिवार हैं – भारोपीय , द्रविण , आस्ट्रिच और चीनी परिवार ।

जिसमें सबसे बडा भाषा परिवार भारोपीय परिवार है। इसे भारत के उत्तर के राज्यों में बोला जाता है।

हिन्दी भाषा का विकाश कम –: संस्कृत – पालि – प्राकृत – अपभृंश – अवहूत – हिन्दी ।

हिन्दी भाषा की आदि जननी संस्कृत है।

हिन्दी शब्द की उत्पत्ति –: सिन्धु – हिन्दु – हिन्द – हिन्द + ई – हिन्दी

हिन्दी मूलतः फारसी भाषा का शब्द है।

भाषा –: भाषा शब्द संस्कत की भाष धातु से बना है। जिसका अर्थ होता है , बोलना

मूल संविधान में 14 भाषाऐं थी , वर्तमान में भाषाओं की संख्या 22 है।

भाषा के तीन प्रकार होते हैं –: लिखित , मौखिक , सांकेतिक ।

मात्रभाषा –: मात्रभाषा वह भाषा होती है, जिसे बालक संस्कार के रूप में अपनी मॉं या परिवार से प्राप्त करता हैं। इस भाषा की एक विशेषता यह है , कि इसे निरक्षर व्यक्ति भी बोल सकता है।

21 फरवरी को मात्रभाषा दिवस मनाया जाता है।

राजभाषा –: राजभाषा वह भाषा होती है, जिसे सरकारी काम काजों में प्रयोग किया जाता है।

राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है।

14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा का स्थान मिला इसलिए प्रत्येक 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप मे मनाते हैं।

– 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

– भारतीय संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिन्दी भाषा का उल्लेख मिलता है।

– भारत के 9 राज्यों की राजभाषा हिन्दी है।

वे 9 राज्य निम्न हैं – mp , cg , Hariyaana , rajsthan , himachalpradesh , uttarpradesh , bihar , uttrakhand , jharkhand

– किसी क्षेत्र में बोली जाने बाली भाषा को राष्ट्रपति अनुसूची 8 में जोड सकता है।

– उच्च न्यायालय , उच्चतम न्यायालय , सांसद एवं किसी विधेयक को पारित करनें में अंग्रजी भाषा का प्रयोग किया जाता है।

बोली –: किसी क्षेत्र में बोली जाने बाली बोली को , बोली कहते हैं।

Special Hindi

विभाषा –: जब कसी बोली का क्षेत्र बड जाता है। तव वह विभाषा बन जाती है। इसमें साहित्य की रचना की जाती है।

हिन्दी में विभाषाओ की संख्या 5 हैं –: अवधी , ब्रजभाषा , खडी बोली , भोजपुरी , मैथिलि ।

हिन्दी में 5 उपभाषाऐं तथा 18 बोलियॉ हैं।

लिपि –: किसी भी शब्द को लिखने के लिए जिस संकेत का प्रयोग किया जाता है उसे लिपि कहते हैं।

1. भारत की सभी लिपियॉ ब्राहमी लिपि से ली गई है।
2. देवनागरी लिपि की उत्पत्ति ब्राहमी लिपि से हुई हैं।
3. देवनाबरी लिपि को लोकनागरी लिपि भी कहते हैं।
4. यह लिपि हिन्दी , मराठी , नेपाली और संस्कत की एकमात्र लिपि है।

Most important facts ----

1. हिन्दी भाषा भारत की लगभग 65 प्रतिशत आवादी द्वारा प्रयोग की जाती है।
2. विश्व में हिन्दी का चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरा स्थान है।
3. खडी बोली का विकाश शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चिमी क्षेत्र से हुआ है।
4. प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 1975 में महाराष्ट्र के नागपुर शहर में हुआ था।
5. 10 वॉ विश्व हिन्दी सम्मेलन 2015 में भोपाल में आयोजित किया गया था।
6. 11 वॉ विश्व हिन्दी सम्मेलन 2018 में मॉरीशश में आयोजित किया जाएगा।
7. 8 वीं अनुसूची में मैथिली एकमात्र ऐसी बोली है , जिसे स्थान मिला है।
8. महाराष्ट्र , पंजाव तथा गुजरात ने हिन्दी को द्वितीय राजभाषा के रूप में अपनाया है।
9. केन्द्रशाषित प्रदेशों में अंडमान निकोबार में हिन्दी को द्वितीय राजभाषा के रूप में अपनाया है।
10. सबसे पहला हिन्दी विश्वविद्यालय 1977 में महाराष्ट्र के वर्धा में बनाया गया ।
11. मध्यप्रदेश में एकमात्र हिन्दी विश्वविद्यालय भोपाल में है। जिसकी स्थापना 2013 में की गई।
12. श्यामसुन्दर दास में पंचमा अक्षर की जगह अनुसार का प्रयोग करने की सिफारिस की।

Specialhindi

वर्णमाला –: वर्णों सुव्यवस्थित कम को वर्णमाला कहते हैं।
वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसके खण्ड नहीं किए जा सकते।

अल्पप्राण –: जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से कम हवा निकलती है , अल्पप्राण कहलाते हैं।

महाप्राण–: जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकलती है , महाप्राण कहलाते हैं।

अघोष –: जिन ध्वनियों के उच्चरण में स्वर तन्त्रियों में कम्पन्न न हो उन्हें अघोष कहते हैं।

सघोष –: जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वर तन्त्रियों में कम्पन्न होता है उन्हें सघोष कहते है।

सत्यमेव जयते

स्वर –: स्वतन्त्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है।
स्वरों के दो भेद होते हैं – लघु स्वर , दीर्घ स्वर

लघु स्वर –: इनका उच्चारण करते समय कम समय लगता है। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
ये चार होते हैं – अ , इ , उ , ऋ !
दीर्घ स्वर –: इनका उच्चारण करते समय लघु स्वर से ज्यादा समय लगता है।
इनकी संख्या 7 होती है – आ , ई , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ !

वर्णमाला में स्वरों की संख्या 11 होती है , सभी स्वर सघोष अल्पप्राण होते हैं।

अयोगवाह –: अं , अः !

व्यंजन –: स्वरों की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं ।

1. **स्पर्श / वर्गीय व्यंजन –:** जिन ध्वनियों के उच्चारण मुख के किसी स्थान विशेष कंठ , तालु, मूर्धा , ओष्ठ से स्पर्श करते हुए निकले उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 25 होती है।

वर्ण	उच्चारण स्थान	अघोष अल्पप्राण	अघोष महाप्राण	सघोष अल्पप्राण	सघोष महाप्राण	सघोष अनुनासिक
'क' वर्ग	कंठ्य	क	ख	ग	घ	ङ
'च' वर्ग	तालु	च	छ	ज	झ	–
'ट' वर्ग	मूर्धा	ट	ठ	ड	ढ	ण
'त' वर्ग	दन्त्य	त	थ	द	ध	न
'प' वर्ग	ऑष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म

2. **अंतस्थ/अनुस्वर व्यंजन –:** य,र,ल,व
3. **ऊष्म व्यंजन –:** श,ष,स,ह
4. **उत्क्षिप्त/द्विगुण व्यंजन –:** ड़,ढ़
5. **संयुक्त व्यंजन –:** क्ष,त्र,ज्ञ,श्र

क्ष – क्+छ
त्र – त्+र
ज्ञ – ज्+–
श्र – श्+र

संज्ञा –: संज्ञा के 5 भेद होते हैं।
1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा –:** जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु,व्यक्ति,किसी स्थान नाम विशेष के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण – राम,सीता,ताजमहल,गंगा,कुल्हाडी,हिमालय,गॉवों के नाम,ग्रहों के नाम आदि!

Special Hindi

2. **जतिवाचक संज्ञा** —: जिन संज्ञा शब्दों से किसी जाति का बोध होता है। उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण – नदी,पर्वत,गॉव,लडका,शहर आदि!

3. **भाववाचक संज्ञा** —: जिन संज्ञा शब्दों से किसी भाव का बोध होता है। उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। ऐसी संज्ञा जिनको न तो हम देख सकते हैं , और न ही स्पर्श कर सकते हैं। केवल महसूस कर सकते है।

उदाहरण – प्रेम,कोध,घृणा,मोह आदि।

सभी रसो के स्थाई भाव और उनके सभी 33 संचारी भाव , भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।

4. **द्रववाचक संज्ञा** —: जिन संज्ञा शब्दो से नापतौल सम्बन्धी बस्तुओं का बोध होता है , पदार्थवाचक संज्ञा कहलाती है।

उदाहरण – इसमें सभी द्रव आ जाते हैं।

5. **समूहवाचक संज्ञा** —: जिन संज्ञा शब्दों से किसी समूह या समुदाय का होने का बोध होता है,समूहवाचक संज्ञा कहलाती है।

उदाहरण – सभा,क्लव,परिषद,सेना,पुलिस आदि!

लिंग —: लिंग शब्द का अर्थ होता है , निशान या चिन्ह।
जिन शब्दों से किसी स्त्री/पुरुष के होने बोध होता है,लिंग कहलाते हैं।
इसके दो भेद होते हैं !
पुल्लिंग – जिन शब्दो से पुरुष जाति के होने का बोध होता है,उसे पुल्लिग शब्द कहते हैं।
स्त्रीलिंग – जिन शब्दो से स्त्री जाति के होने का बोध होता है,उन शब्दों को स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं।

वचन —: शब्द के किसी रूप से किसी वस्तु के एक या एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।
हिन्दी में वचन दो होते हैं।

1. **एक वचन** —: शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु के एक होने का बोध होता है,एकवचन कहलाते हैं।
2. **वहुवचन** —: शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु के दो या दो से अधिक होने का बोध होता है,वहुबचन कहलाते हैं।

कारक —: संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य पदों से जो सम्बन्ध होता है,उसे कारक कहते हैं। इनकी संख्या 8 होती है।

Special Hindi

ये 8 कारक निम्न प्रकार के हैं –

कारक	विभक्तियाँ
कर्ताकारक	ने
कर्मकारक	को
करणकारक	से / के द्वारा
सम्प्रदान	के लिए / को
अपादान	से अलग होने के लिए
सम्बन्धकारक	का , की , के , रा , री , रे
अधिकरणकारक	में / पर
सम्बोधनकारक	अरे! / ओह!

1. कर्ताकारक – उसने भोजन कर लिया , श्याम ने किताव पढ़ ली ।
2. कर्मकारक – राम ने रावण को मारा , श्याम ने किताव को पढ़ लिया।
3. करणकारक – में कलम से लिखता हूँ , श्याम गेंद से खेलता है।
4. सम्प्रदानकारक – सम्प्रदान का अर्थ होता है देना।
5. अपादान – गंगा हिमालय से निकलती है , राम घर से भाग गया।
6. सम्बन्धकारक – वह मेंरा भाई है।
7. अधिकरणकारक – घोंसले में चिड़िया है , सड़क पर गाड़ी खड़ी है।
8. सम्वोधनकारक – अरे! टाप कब आये , लड़के! जरा इधर आना।

सर्वनाम –: जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं , सर्वनाम कहलाते हैं।

सर्वनाम 6 प्रकार के होते हैं –

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – इसके 3 भेद होते हैं – मध्यपुरूष , उत्तमपुरूष , अन्यपुरूष।
2. निश्चयवाचक सर्वनाम – यह,ये,वह,वे ।
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई , कुछ !
4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम – जो , सो!
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – कौन , क्या !
6. निजवाचक सर्वनाम – आप , स्वंय , खुद !

विशेषण –: जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं , उन्हें विशेषण कहते है। जिसकी विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं।

उदाहरण – सीता सुन्दर है। (इसमें सुन्दर विशेषण तथा सीता विशेष्य है)

विशेषण 4 प्रकार के होते हैं।

1. सर्वनामिक तथा संकेतवाचक विशेषण – ऐसे शब्द जो होते तो सर्वनाम हैं लेकिन कार्य विशेषण का करते हैं सर्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।
2. गुणवाचक विशेषण – जिन विशेषणों से किसी वस्तु , व्यक्ति , आकार – प्रकार एवं गुण का बोध होता है। गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
3. संख्यावाचक सर्वनाम – जो शब्द किसी संज्ञा व सर्वनाम की संख्यात्मक विशेषता वतलाते हैं , उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
4. परिमाणवाचक विशेषण – जिन शब्दो से किसी पदार्थ की मात्रा सम्बन्धी विशेषता का बोध होता हैं परिणामवाचक विशेषण कहलाते हैं।

Special Hindi

:– विशेषणों की तुलनात्मक अवस्था –:

मूलअवस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
	(तर , प्रत्यय)	(तम , प्रत्यय)
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम

प्रविशेषण –: ऐसे शब्द जो विशेषणों की भी विशेषता बतलाते हैं , प्रविशेषण कहलाते हैं।

उदाहरण – सीता अत्यंन्त सुन्दर है!

क्रिया –: जिन शब्दों से किसी कार्य के होने या करने का बोध होता है , क्रिया कहलाते हैं। रचना की दृष्टि या कम्र के आधार पर क्रिया के 2 भेद होते हैं।

1. **अकर्मक** – जिस क्रिया में कर्म नहीं होता उसे अकर्मक कहते हैं।
2. **सकर्मक** – जिस क्रिया में कर्म होता है , उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

नोट – किसी क्रिया में क्या/किसको लगा देने पर अगर वाक्य शुद्ध बनता है,तो क्रिया सकर्मक होगी और जव वाक्य अशुद्ध बनता है,तो क्रिया अकर्मक होगी!

क्रिया के कुछ अन्य भेद –:

पूर्वकालिक क्रिया – जव एक क्रिया पूरी होकर दूसरी क्रिया प्रारम्भ होती हैं , तो उस पहली वाली क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं।
उदाहरण – राम पढ़कर सो गया ! , राम ने खेलकर दूध पिया !
द्विकर्मक क्रिया – जिस क्रिया में दो कर्म होते हैं। द्विकर्मक क्रिया कहलाती हैं।
उदाहरण – शिक्षक ने छात्रों को हिन्दी पढ़ाई , नौकर ने कुत्ते को दूध पिलाया ।
संयुक्त क्रिया – जव दो या दो से अधिक क्रियाऐं एक साथ प्रयुक्त होती हैं , संयुक्त क्रियाऐं कहलाती हैं।
उदाहरण – वह मेरे घर आता–जाता है , बच्चे खेलते–कूँदते रहते हैं।
प्रेरणार्थक क्रिया – जव कर्ता स्वंय क्रिया न करते हुए , किसी दूसरे को प्रेरणा देकर करवाता है। प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है।
उदाहरण – सीता राधा से भोजन मगवाती है।
क्रियाअर्थक सेज्ञा – जव कोई क्रिया संज्ञा जैसा व्यवहार करती है तो वह क्रियार्थक संज्ञा कहलाती है।
उदाहरण – टहलना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। , मरना देश के हित में है।
नमवोधक क्रिया – जव कोई क्रिया संज्ञा या विशेषण से मिलकर वनती है, तव उसे नामवोधक क्रिया कहते हैं।
उदाहरण – दु:खी + होना – दुखी होना।

Special Hindi

और अधिक जानने के लिए मेरी बेवसाइट–RAMKESHeducation.com पर जाएँ।

:—वाच्य —:

वाच्य शब्द का अर्थ होता है,कि जिस वाक्य को कहने / वोलने पर कर्ता,कर्म,भाव की प्रधानता होती है,वाच्य कहलाते हैं।

वाच्य प्रकार के होते है :—

1. कर्तवाच्य — जिन वाक्यो मे कर्ता प्रधान होता है , कर्तवाच्य कहलाते हैं।
2. कर्मवाच्य — जिन वाक्यों में कर्म प्रधान होता है , कर्मवाच्य कहलामे हैं।
3. भाववाच्य — जिन वाक्यों के द्वारा हमारे सामर्थ्य/क्षमता का बोध होता है , ऐसे वाक्य भाववाच्य कहलाते हैं।

उदाहरण — मुझसे बोला नहीं जाता । , राम से पढ़ा नहीं जाता।

अव्यय/अविकारी शब्द —: जिन शब्दों में लिंग,वचन,कारक के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता , ऐसे शब्द अव्यय या अविकारी शब्द कहलाते हैं।
अव्यय 4 प्रकार के होते हैं।

1. क्रियाविशेषण अव्यय — जो शब्द क्रिया की विशेषता बतलाते हैं , क्रियाविशेषण अव्यय कहलाते हैं।

इसके 4 भेद होते हैं — कालवाचक क्रिया , स्थानवाचक क्रिया , परिमाणवाचक क्रिया , रीतिवाचक क्रिया।

2. सम्वन्धवोधक अव्यय — जो अव्यय किसी संज्ञा के बाद आकर उस संज्ञा का सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द से दिखाते हैं , उहें सम्बन्धवोधक अव्यय कहते हैं।

उदाहरण — आपका वोलने के बजाए सुनने पर ध्यान देना चाहिए।

3. समुच्चयवोधक अव्यय — दो वाक्यों को परस्पर जोडने वाले शब्द समुच्चयवोधक अव्यय कहलाते हैं।

उदाहरण — मेरे पास किताव और कलम है। , राहुल ने वहुत परिश्रम किया लेकिन असफल हो गया।

4. विष्मयादिवोधक अव्यय — जिन अव्ययों से हर्ष,शोक,घृणा आदि भाव व्यंजित होते हैं, उन्हें विष्मयादिवोधक अव्यय कहते हैं।

उदाहरण — अरे! यह क्या हो गया। , छि:छि:! दूर हटो। , ओह! ठतनी लम्बी रेलगाडी।

:— निपात —:

जो अव्यय किसी वाक्य में जुड़कर एक विशेष वल को व्यक्त करते हैं उन्हें निपात कहते हैं।

उदाहरण — मेरे साथ राम भी दिल्ली जाएगा। , राम ने ही रावन को मारा।

Special Hindi

:– शब्द –:

शब्द – सार्थक वर्णों के समूह को शब्द कहते हैं।

शब्दों को 4 भागों में विभाजित किया गया है –

1. उत्पत्ति के आधार पर – उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को 5 भागों में बॉटा गया है। तत्यम , तद्भव , देशज , विदेशज , संकर।

2. रचना/वनावट के आधार पर – रचना के आधार पर शब्दों को 3 भागों में बॉटा गया है। रूढ़ शब्द , यौगिक , योगरूढ़।

3. रूप/प्रयोग के आधार पर – रूप/प्रयोग के आधार पर शब्दों को 2 भागों में बॉटा गया है। विकारी , अविकारी।

4. अर्थ के आधार पर – अर्थ के आधार पर शब्दों को 4 भागों में बॉटा गया है। एकार्थी , अनेकार्थी , समानार्थी , विलोमशब्द।

कृपया प्रतीक्षा करें –